राम भक्त

शबरी

(खण्डकाव्य)

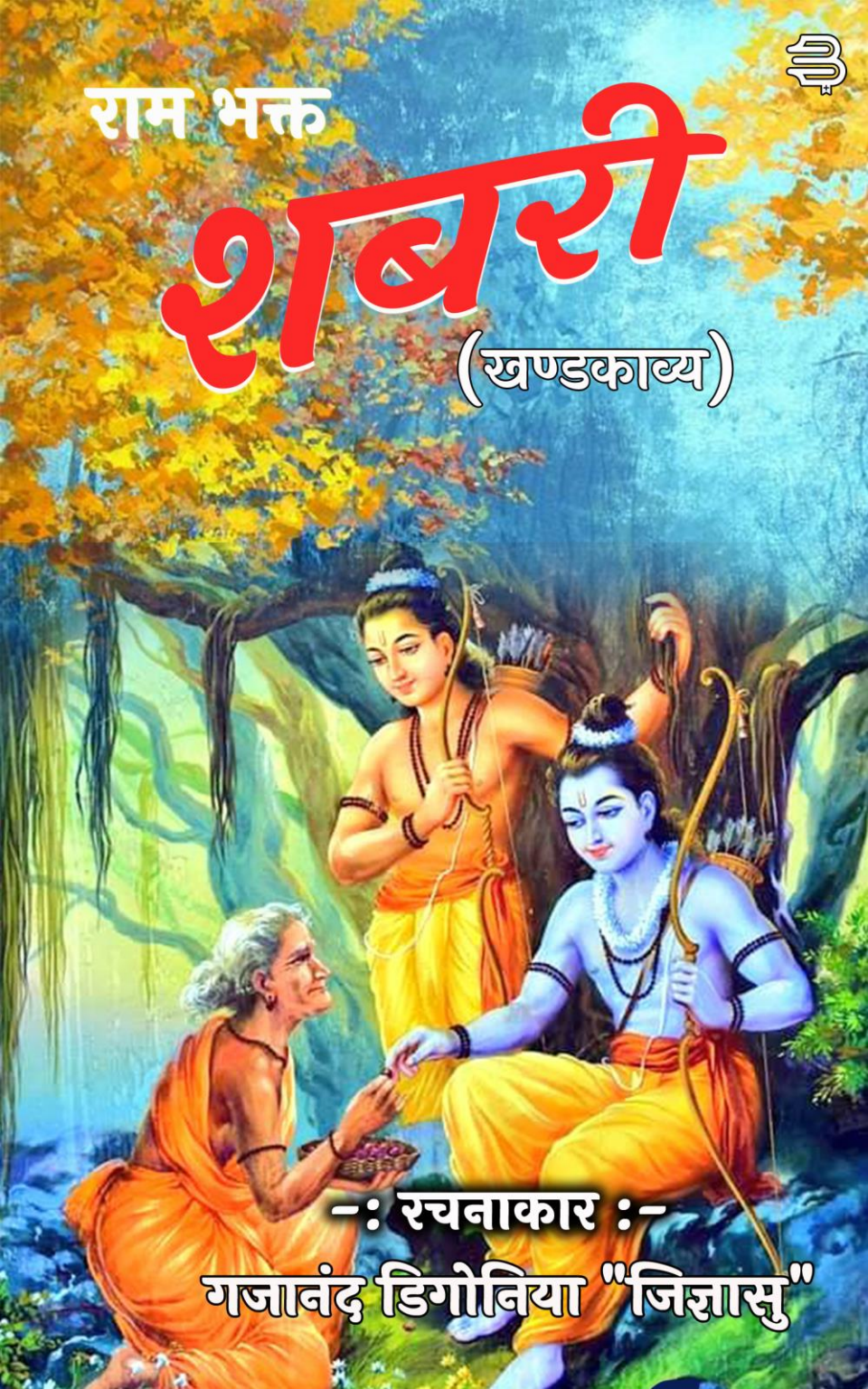

-: रचनाकार :-
गजानंद डिगोनिया "जिज्ञासु"

राम भक्त शबरी

(खण्डकाव्य)

रचनाकार :- गजानंद डिगोनिया "जिज्ञासु"

बुक्सक्लिनिक पब्लिशिंग, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

'साहित्य अकादमी, मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद, मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग, भोपाल के सहयोग से प्रकाशित।'

India's Fastest Growing Self Publishing House

Booksclinic Publishing

----------Contact Us At----------

Call or Whatapp @ 8965949968 or Mail
@ publish@booksclinic.com

Website: - **www.booksclinic.com**

Booksclinic Builidng, Kududand Near Punchmukhi
Hanuman Mandir, Bilaspur, Chhattisgarh, India, 495001

This book has been published with all reasonable efforts taken to make the material error-free after the consent of the author.

All rights reserved, no part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

Publisher: Booksclinic Publishing
Edition: First
ISBN: 978-93-5535-553-9
Copyright © 2022 Gajanand Digoniya "Jigyasu"
Genre: Poetry
₹: 180/-

Printed in India

राम भक्त शबरी

(खण्डकाव्य)

गजानंद डिगोनिया "जिज्ञासु"

समर्पण

श्रीमती कृष्णा बाई डिगोनिया
देवलोक गमन :- आश्विन मास चतुर्थी
दिनांक १९ . ९. २०२०

मेरे निज जीवन की पूंजी,
आज बटोरी कण-कण मां!
पोथी पावन राम भगत की,
लो करता हूं अरपण मां!!

******

मुझे मिले आशीष तुम्हारा,
सपना रहे ना अधूरा।
सत्य डगर से कभी न भटकूं,
हो सकल मनोरथ पूरा ।।

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री
मध्यप्रदेश

दिनांक:- 26-09-2022
पत्र क्रमांक - 700/22

संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि बुधनी विधानसभा क्षेत्र के नसरूल्लागंज निवासी श्री गजानंद डिगोनिया "जिज्ञासु" द्वारा रामभक्त शबरी (खण्ड काव्य) की रचना की गई है।

चार सर्गों में पूर्ण इस पुस्तक में राम भक्त शबरी की कथा को सरल और सुरुचिपूर्ण तरीके से प्रस्तुत किया गया है। पाठकों के लिए यह पुस्तक, ज्ञान और भक्ति का स्रोत सिद्ध होगी, मेरी कामना है।

पुस्तक प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं।

(शिवराज सिंह चौहान)

प्रति,

श्री गजानंद डिगोनिया "जिज्ञासु"
4031, वार्ड नं-15, मुन्ना कॉलोनी
शंकर विहार नीलकंठ रोड
नसरूल्लागंज, सीहोर (म.प्र.)

6, श्यामला हिल्स, भोपाल - 462 002

भूमिका

इस आपाधापी की दुनिया में, आज के इस दौर में हमारे लिए सर्वोत्तम क्या है? बता पाना मुश्किल है। आज समाज, देश असंतुष्ट सा प्रतीत होता है, देश एवं विश्व में विद्वेश की आग लगी हुई है, आशा की कोई किरण नज़र नहीं आती।

ऐसे खिन्नता पूर्ण माहौल में हमारी दृष्टि साहित्य की ओर जाती है, साहित्य समाज का दर्पण होता है, इस साहित्य जगत में अनुपम एवं ज्ञानवर्धक साहित्य है, जिससे मानव जीवन उच्चता को प्राप्त कर सकता है। साहित्य की इसी श्रंखला में एक कड़ी जोड़ने जा रहा हूं आशा करता हूं इस कृति से हमारा मार्गदर्शन अवश्य होगा।

मैं गजानंद डिगोनिया "जिज्ञासु" आपके पावन चरणों में शत–शत वंदन करता हूं, और अपनी बात आपके समक्ष रखता हूं।

मेरी पूज्य माता जी श्रीमती कृष्णाबाई डिगोनिया के देव लोक गमन के पूरे एक वर्ष बीत चुका था, मनसे टूट चुका,थका हारा उदास सा नित प्रति अपने को एक अधूरा एवं खाली–खाली महसूस कर रहा था। मेरे गुरु महाराज जी की असीम कृपा से भाद्रपद कृष्ण पक्ष पावन श्री कृष्ण जन्माष्टमी सन् दो हजार इक्कीस की पावन संध्या पर मेरे अंदर से एक होले से आवाज आई– कुछ कर...। बस उसी प्रेरणा को कागज पर मूर्त रूप देना शुरू कर दिया। दो माह की इस साधना के उपरांत एक रचना तैयार हुई "राम भक्त शबरी खंडकाव्य"।

शबरी त्रेता युग की एक अनन्य राम भक्त थी, जिसकी कथा शास्त्रों, भागवत कथा, रामायण, रामचरितमानस एवं दंत कथाओं में प्रचलित है। वनवास के दौरान श्री सीता जी की खोज करते हुए एक दिन शबरी से प्रभु राम की भेंट होती है। आप श्री वहां शबरी के अतिथि बनते हैं, शबरी भगवान राम एवं छोटे भाई लक्ष्मण को

जंगल के बेर का भोग लगाती है । आप के श्रीमुख से नवधा भक्ति का श्रवण कर मानव जीवन का परम लक्ष्य प्राप्त करती है।

खंडकाव्य शांत रस से सराबोर है जो आपको भक्ति भावना के शांति सागर में हिलोरे भरने को प्रेरित करेगा। जिससे आपके इष्ट आराध्या के प्रति आध्यात्मिक भक्ति को और प्रगाढ़ करने में सहायक सिद्ध होगा।

चार सर्गो से परिपूर्ण खंडकाव्य की रचना मुझे मेरे गुरुदेव से प्रेरणा पाकर लक्ष्य बना के समाज में सदग्रंथों, कृतियों की आवश्यकता है। आज समाज अन्य सभ्यता से प्रेरित होकर भारतीय मूल संस्कारों से भटक रहा है। हमारा परम कर्तव्य बनता है कि समय–समय पर एक सजग प्रहरी बनकर हमारे कर्तव्यों का निर्वहन करते रहे। समाज में फैल रहे भ्रष्टाचार, पर्यावरण प्रदूषण, फैशन, भ्रुण हत्या, अंधविश्वास, लालच, बड़े बुजुर्गों या माता–पिता के प्रति जो विशेषकर आजकल उनके परिवार जनों द्वारा किए जा रहे व्यवहार, असहिष्णुता, अस्मिता के प्रति लोगों की विचारधारा इन सभी ज्वलंत मुद्दों पर लेखनी चलाने में सफलता प्राप्त की है।

शबरी खंडकाव्य में आपको संगीतात्मकता, रस युक्त, सार छंद (जिसमें सौलह एवं चौदह की यति से तीस मात्राओं)से कथा को पूर्ण करने का प्रयास किया है। इसमें अलंकारों का चमत्कृत रूप भी है–

"शबरी ने फिर एक बेर दी,
एक बेर दी खाली।
लखन ने खायी, नहीं दवा ली,
किया बहाना खाली।"

मैं यह भी मानता हूं कि मनुष्य परिपूर्ण नहीं हो सकता, इसलिए इस पुस्तक के कला पक्ष में मैं भी लिक से भटका होऊंगा, त्रुटियां की होंगी, यह मेरा प्रथम प्रयास है। मेरी त्रुटियों को

नज़रअंदाज करते हुए, इसकी अच्छाइयों की ओर ध्यान आकृष्ट करेंगे।

खंडकाव्य का भाव पक्ष बड़ा ही मनोहरी एवं सरस है जिसमें वन प्रदेश, प्रातः काल, संध्या,रात्रि, पशु, कलरव करते पक्षी, नदी, झरने आदि आपको उबाऊपन से दूर रखने में कारगर सिद्ध होगा। इस कृति में भगवान राम का मर्यादा पुरुषोत्तम स्वरूप का अनुपम स्वभाव और सहज गुणों की व्याख्या की गई है।

अंत में कहूंगा कि राम भक्त शबरी खंडकाव्य के समस्त अंश, प्रतिबिंब, सब मेरी व्यक्तिगत निजि भावना है जिससे आप किसी की भावना को ठेस पहुंचाना या आहत करना मेरी भावना नहीं है, यह केवल संयोग मात्र हो सकता है, एक बार पुनः शत शत नमन३..

निवेदक एवं रचनाकार

गजानंद डिगोनिया "जिज्ञासु"

शुभकामना संदेश

सर्वप्रथम में आदरणीय गजानंद डिगोनिया 'जिज्ञासु' जी को "राम भक्त शबरी" खंडकाव्य के सृजन के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ जिन्होंने अपने खंडकाव्य हेतु त्रेता युग की एक ऐसी भक्तिन के चरित्र को चुना जिनको अपने गुरू मुनि मतंग की वाणी पर परम विश्वास था। उस परम पुण्यात्मा का नाम है शबरी। इस खंडकाव्य को रचनाकार ने कानन सर्ग, आश्रम सर्ग, विनय सर्ग और मुक्ति सर्ग इन चार सर्गों में प्रसंगानुसार विभक्त किया है। कानन सर्ग शोध परक है जिसमें रचनाकार ने निजी शोध के आधार पर शबरी का विवाह नहीं करना तथा बाल्यकाल में ही अपने घर से पलायन करने का चित्रण किया है, वहीं आश्रम स्वर्ग में वन–वन भटकते हुए मुनि मतंग के आश्रम पर शबरी का आश्रय पाना तथा मुनिराज के परलोक गमन की कथा का समावेश है। विनय सर्ग अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी सर्ग को ध्यान में रखते हुए ही रचनाकार ने इस खंडकाव्य का सृजन किया है। इसमें भगवान श्री राम अपनी भार्या सीता जी को खोजते हुए शबरी की कुटिया पर आते हैं। भक्त और भगवान के मिलन की लीला का मनोहारी वर्णन इस सर्ग में पाठकों को पढ़ने को मिलेगा। अंतिम मुक्ति सर्ग है जिसमें शबरी के जूठे बेर भगवान ग्रहण करते हैं। यह प्रेम की पराकाष्ठा है तथा भगवान श्री राम के भक्त वत्सल कहलाने को सार्थक करता है। साथ ही दशरथ नंदन यहाँ पर जगत के कल्याण हेतु शबरी को नवधा भक्ति सुनाते हैं एवं योगाग्नि में अपने तन को भस्म कर शबरी के परलोक गमन की कथा भी अत्यंत मार्मिक रूप से इस सर्ग में कही गई है।

अंत में गजानंद डिगोनिया 'जिज्ञासु' जी के इस खंडकाव्य को पढ़कर मैं इतना अवश्य कहूँगा कि जिस प्रकार राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी का "पंचवटी" खंडकाव्य अत्यंत रोचक एवं

भावपूर्ण है उसी प्रकार आदरणीय डिगोनिया जी द्वारा सृजित यह "राम भक्त शबरी" खंडकाव्य भी हिंदी साहित्य जगत में अपनी अलग पहचान स्थापित करेगा।

शुभकामनाओं सहित।

आपका शुभेच्छु
सुरेंद्र शर्मा सागर
श्योपुर (मध्य प्रदेश)

शुभकामना संदेश

कवि गजानंद डिगोनिया जी द्वारा सृजित खंड काव्य 'राम भक्त शबरी' अपने शीर्षक को सार्थक करता हुआ एक उत्तम खंड काव्य है। यदि निर्मल निष्काम भक्ति द्वारा दिव्य लोक एवं मुक्ति की बात हो तो निःसंदेह माता शबरी का नाम हमें उनकी भक्ति की पराकाष्ठा के समक्ष नतमस्तक देता है। सर्वप्रथम मैं कवि गजानंद डिगोनिया जी को कोटिशः बधाइयां देती हूं कि उन्होंने अपने खंड काव्य लेखन के लिए इतना उत्कृष्ट विषय चुना। अत्यंत सरल सहज भाषा में उन्होंने माता शबरी की कथा का इतना सुंदर शब्द चित्र खींचा है कि प्रतीत होता है जैसे पढ़ नहीं रहे हैं अपितु माता शबरी के पुनीत चरित्र और कृत्य को साक्षात देख रहे हैं।

उनके विवाह की तैयारियां, पशु पक्षियों के प्रति उनकी संवेदना, उनका करुण हृदय, उनका विवाह न करने का निश्चय, उनका ऋषियों के आश्रम तक पहुंचना, अनुपम सेवा भाव और भक्ति की पराकाष्ठा तक पहुंचना इत्यादि सभी घटनाओं को क्रमशः बहुत ही सुंदर शब्द संयोजन के साथ चित्रित किया गया है। काव्य में पाठकों को बांधे रखने की अद्‌भुत क्षमता है। माता शबरी की राम भक्ति के साथ कविवर की पंक्तियों ने पूर्ण न्याय किया है।

वर्तमान समय में जब सनातन संस्कृति धीरे–धीरे लुप्त होती जा रही है ऐसे समय में भक्ति रस की धारा को पुनर्जीवित करने के लिए और सनातन संस्कृति को सरल शब्दों में जन जन पहुंचाने के लिए मैं कवि गजानंद जी को पुनः बधाई देती हूं।

मेरी हार्दिक शुभकामना है कि यह खंड – काव्य अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचे ताकि माता शबरी की पुनीत भक्ति एवं सरलता से सभी न केवल परिचित हों अपितु प्रेरणा भी लें।

इस प्रशंसनीय एवं वंदनीय सृजन के लिए मैं कवि श्रेष्ठ को अनंत शुभकामनाएं प्रेषित करती हूं और बधाई देती हूं।

वेदस्मृति कृती
वरिष्ठ कवयित्री/लेखिका
पुणे महाराष्ट्र

!! शुभाशंसा पत्र !!

'कवि गजानंद डिगोनिया 'जिशासु एक भक्ति भावना से परिपूर्ण सरल हृदय रचनाकार हैं। "राम भक्त शबरी" आपकी भक्ति भावना को प्रदर्शित करने वाला एक बहुत ही सुन्दर और मनोरम खण्डकाव्य है। यह खण्ड काव्य चार सर्गो कानन सर्ग, आश्रम सर्ग, विनय सर्ग और मुक्ति सर्ग में विभक्त है। हालांकि यह खण्ड काव्य बहुत लम्बा नहीं है, फिर भी कवि ने संक्षेप में ही गागर में सागर भरने का सफल प्रयास किया है। प्रथम सर्ग में कवि ने माँ भगवती सीता की खोज में भटकते हुए वनवासी प्रभु श्री राम और लक्ष्मण जी का बड़ा ही मनोहारी वर्णन किया है। जंगल की प्राकृतिक छटा का वर्णन करते हुए कवि ने संध्या, रात्रि और प्रभात का बड़ा ही सुन्दर और मनोहारी चित्रण किया है। खण्डकाव्य का प्रारम्भ कवि ने बहुत ही सुन्दर ढंग से किया है–

"काली काली घटा हो गई,
महक रही थी अमराई।
सहज स्वरों में बाते करते,
राम लखन दोनों भाई।।'

द्वितीय सर्ग में कवि ने माता शबरी के बचपन से लेकर उनके गृह त्याग और वन में भटकते हुए ऋषि मतंग से मिलने तक का सारा वृत्तान्त बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है। ऋषि मतंग शबरी को प्रभु श्रीराम से मिलने की आस बँधाकर अंतर्धान हो जाते हैं। माता शबरी गुरु मतंग से बिछड़ने पर अत्यंत व्यथित होती हैं

और गुरु की बात को मानकर प्रभु श्री राम का भजन कीर्तन करते हुए दिन व्यतीत करने लगती हैं।

तृतीय सर्ग में कवि ने माता शबरी की प्रभु श्रीराम से मिलने की उत्कंठा का बड़ा ही सुन्दर और मनोहारी वर्णन किया है। प्रभु श्री राम से मिलन की आस अपने हृदय में सँजोए माता शबरी दिन–रात प्रभु के भजन कीर्तन में लगी रहती हैं और जंगल से पुष्प लाकर प्रभु के मार्ग में बिछाकर प्रतिदिन उनका इंतजार करती हैं। प्रभु श्री राम से मिलन होने पर माता शबरी आनन्द से विह्वल होकर प्रभु के चरणों में गिर पड़ती हैं और अत्यंत विनम्रता पूर्वक प्रार्थना करते हुए कहती हैं, कि हे प्रभु आप त्रिलोक के स्वामी और मैं अधम और नीच जाति की भीलनी मैं आपकी सेवा कैसे करूँ ? इस पर प्रभु श्री राम शबरी को समझाते हुए उसे नवधा भक्ति का उपदेश देकर उसका उद्धार करते हैं।

चतुर्थ सर्ग में माता शबरी द्वारा प्रभु श्री राम को बेर खिलाकर उनका स्वागत करने का वर्णन है और अन्त में माता शबरी के महा प्रस्थान का बड़ा ही सुन्दर और मनोहारी चित्रण किया गया है। खण्डकाव्य का भाव पक्ष अत्यन्त मनोरम है। आपका यह खण्डकाव्य जनमानस में एक नई चेतना और स्फूर्ति जागरित करे ऐसी हमारी मंगल कामना है। हम आपके उज्ज्वल भविष्य एवं उत्कृष्ट साहित्यिक जीवन की मंगल कामना करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आपकी लेखनी इसी तरह अनवरत चलती रहे। हमारी शुभकामनाएँ हमेशा आपके साथ हैं। धन्यवाद

हंसराज सिंह 'हंस'
संस्थापक एवं अध्यक्ष
काव्य गंगा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पटल
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

शुभकामना संदेश

छोटे भाई गजानंद डिगोनिया के खण्डकाव्य "राम भक्त शबरी" को पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ ।

फ़ेसबुक मीडिया के माध्यम से कुछ समय पूर्व उनसे परिचय हुआ।

उनके द्वारा रचित यह प्रथम कृति आध्यात्मिक होने से यह आभास होता है कि कवि की इस उम्र में भी ईश्वर से श्रद्धा है,जो कई कवियों को ढलती उम्र में भी नसीब नहीं होती।

पुस्तक भाव प्रधान है, कलापक्ष पर कवि को कुछ और प्रयास करने होंगे।

ईश्वर से प्रार्थना है कि कवि की कीर्ति बल्लरी हमेशा पल्लवित और पुष्पित होकर काव्य संसार में अपनी मादक गंध अनवरत बिखेरती रहे, तथा उनकी प्रतिभा रूपी चंद्रिका साहित्याकाश में आलोकित होती रहे।

इन शुभकामनाओं के साथ डिगोनिया जी को बहुत बहुत बधाई।

राजवीर सिंह सिकरवार
'भारती'
(राष्ट्रीय कवि) एवं
"कवित्त रामायण" के प्रणेता
15/28 कवि कुटीर जीनफील्ड सबलगढ़ मुरैना मध्यप्रदेश

आत्म निवेदन

"राम भक्त शबरी" (खंडकाव्य) की प्रति आपके सम्मुख प्रस्तुत है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह प्रति आपके मानव जीवन की प्रतिभा में सहयोगी सिद्ध होगी।"

आपसे निवेदन है कि इसका श्रवण, चिंतन,मनन कर अपने देव दुर्लभ जीवन को सार्थक करें.... आनंद लें.....

लेखकः— गजानंद डिगोनिया "जिज्ञासु"

अनुक्रमाणिका

क्र.	सर्ग	पेज न.
1.	कानन–सर्ग	**1**
2.	आश्रम–सग	**17**
3.	विनय–सर्ग	**33**
4.	मुक्ति–सर्ग	**49**

*****

कानन – सर्ग

काली काली घटा हो गयी,
महक रही थी अंमराई।
सहज स्वरो में बाते करते,
राम लखन दोनो भाई। (01)

माया मृग से था आंशकित,
प्रिया न मुझे पहचान सकी।
भ्रम मिश्रित आशाओं को,
क्यों न वह पहचान सकी। (02)

भाग्य ने कैसी करवट बदली,
सब कुछ हुआ विपरीत अनुज।
आशा और निराशाओं में,
घिरा हुआ है आज मनुज। (03)

चले विधाता आगे होकर,
पीछे भाई लखन चलता।
धीरे धीरे संध्या होती,
पश्चिम गामी भी ढलता। (04)

तभी परिंदा आसमान से,
पानी से प्रेरित होकर।
आसमान से खोज रहा था,
पानी का कोई पोखर। (05)

दिखा परिंदा आसमान में,
दिशा वही इनकी भी थी।
मन भावन आनन्द भरा,
कानन की छटा निराली थी। (06)

लखन देख सुहावन मौषम,
मन भावन सी बेला है।
चलो सरि के निकट चलो,
संध्या वंदन की बेला है। (07)

निशा करीब मुझे लगती है,
तारे निकल रहे अम्बर।
आज विकल मेरा मन भारी,
यहीं खोजलो कोई तरबर। (08)

हाथ जोड़ अभिवादन करते,
हे शंकर जय उमा पति।
सिया खोज में भटक रहा हूँ,
जाने कब रूकेगी मेरी गति। (09)

वट की छाया में बैठे हैं,
शंकाओं से घिरा है मन।
छेड़ो कोई लखन तराना,
सुन पुलकित हो जाये तन। (10)

भैया मैं क्या कहूं कहानी,
वीर भरी या लज्जा की।
बहुत दिनों से तीर मौन है,
धनुष की डोरी है ढीली। (11)

कितने दिन हो गये खोजते,
लगा ना पाये पता कहीं।
खोज अधूरी रही तो भाई,
डूब मरूँगा यही कहीं। (12)

क्या मुँह लेकर हम जायेंगे,
घर जाने का साहस नही।
पूछेंगे सब लोग अवध के,
माता सीता कहाँ गयी? (13)

कोई न उत्तर मुझे दिखाई,
न तरकीब दिखाती है।
जलता है मेरा शोणित,
निश्तेज लगती जवानी है। (14)

इतना ही भर पता हमें,
कोई दक्षिण का वासी है।
शंकर का आशीर्वाद जिसे,
कोइ बलि यति सन्यासी है। (15)

सच सच बात बताओं भैया,
बुरा न मानों तो पूछूँ।
अपने मन की आप ही जानो,
मन हो पक्का तो पूछूँ। (16)

कहीं न मिली खबर अगर,
न मिली हमें सीता माता।
आ जीवन रहोगे यूं ही,
या जोड़ोगे दूजा नाता। (17)

लखन कहीं ऐसा होता तो,
क्या फिरते रहते वन में हम।
देख मेरे आनन को पगले,
तुझको लगता कोई कम गम। (18)

सीता मेरे तन–मन में,
रमी हुई है वो हर दम।
सोंच नही सकता बिन उसके,
मेरा जीवन वे मतलब। (19)

ब्याह दूसरा करूँ तो सुन,
मर्यादा का खण्डन होगा।
मैं राम अकेला हूँ ऐसा,
कोई राम न फिर दूजा होगा। (20)

तू भी बड़ी ठिठोली करता,
मेरा परिहास बनाता है।
या तू मुझको कायर दिखता,
तरकस क्यों बाँधे फिरता है। (21)

जो भी होगा जैसा होगा,
साथ भिड़ेंगे जाकर हम।
चाहे चौदह के सौलह हो,
तब तक हम न जायेंगे घर। (22)

थे फिरते फिरते कानन में,
वे आगे बड़ते जाते थे।
कोइ मिलता संत फकीरा तो,
हृदय उमंग भर आते थे। (23)

जंगल के तरू लताओं से,
सीता का पता लगाते थे।
भूक प्यास सब गौंण हुई,
अपना अनुमान लगाते थे। (24)

दोनों की ये मीठी बातें,
न कभी खत्म हो पाती थी।
मन बहले जैसे भी हो,
कानन रातों की साथी थी। (25)

बातों–बातों में रात कटी,
फिर नया दिवस आ जाता था।
सब शौच क्रिया से हो निवृत,
एक नया लक्ष्य बन जाता था। (26)

ऊषा काल उठे लघु–दाऊ,
झुक–झुक ईश मनाते थे।
कानन अंचल की सरिता,
के बैठ किनारे जाते थे। (27)

ऊँचे–ऊँचे तरू किनारे,
मानों अंबर को है नापे।
जिस पर बैठे कीर पपीहा,
कोयल मस्ति में गाते। (28)

विपिन नदी झर नालों में,
कल कल संगीत सुनाता था।
चटक चाँदनी मधुर मयी,
अम्बर में कोहरा छाया था। (29)

शान्ति छायी थी चारों ओर,
अनुपम दृश्य निराला था।
थे हिरण भागते झुण्डों में,
मृगराज कभी गुर्राता था। (30)

मेरे राम तपश्या में हो रत,
शून्य से शिखर तक जाते।
यहीं पास वीरासन लेकर,
सौमित्र जी पहरा लगाते। (31)

अधरों पर ले मुस्कान रहे,
रघुवर मुस्कान मधुर लेते।
आनन्द से मन भर जाता,
अनंत दूरी तय कर लेते। (32)

गुरू कृपा थी जिन पर,
सुन्दर आभा से झलक रही।
सिथिल गात सब अंग–अंग,
मन में उठती बस तरंग रही। (33)

पिया मिलन की आशा थी,
मन में न कामना बाकी थी।
स्वाँसों का झूला जारी था,
ये मन में कामना पाली थी। (34)

कोटी भानू सम उदित हुआ,
जब भूक न थी न प्यास रही।
राजीव लोचन बंद किये,
सब आश गयी न आश रही। (35)

बाते करते वो मन ही मन,
मन का उद्रेक पिघलता था।
मन के दर्पण का शीशा भी,
स्वच्छ पारे सा उछलता था। (36)

दिन भर के जब चलने से,
जो भारी पीड़ा होती थी।
नित्य साधना करने से,
तन की श्रमता गल जाती थी। (37)

वो अपने ईष्ट के सम्मुख,
मन ही मन में मुस्कातें।
हे उमा पति कैलाश पति,
हर–हर शंकर को गातें। (38)

हे! डमरू वाले त्रिपुरारी,
गंगा धारण करने वाले।
मुझको वर दो हे नंग बदन,
नंदी से भृमण करने वाले। (39)

हे परम पिता, हे तीन नयन,
मेरी खोज अधूरी हो पूरी।
कुछ ऐसा हो उपकार प्रभु,
मिट जाये सीता से दूरी। (40)

ऊर्जा भरदो मेरे तन में,
पापी को ढूँड निकालू मैं।
करनी का उसको दंड देकर,
सरित गंग में नहालू मैं। (41)

उसको मार गिराऊँ जिसने,
सीता का हरण किया है।
पंचवटी विध्वंस कर जिसने,
रघुकुल से रार बढ़ाया है। (42)

नित गरम अश्रु उपजाता हूँ,
मैं विरह ताप से तपता हूँ।
मन का विपिन अति दारुण,
जंगल में फिरता रहता हूँ। (43)

दिन–दिन मैं धंसता जाता हूँ,
ज्यों दलदल बीच समाता हूँ ।
कैसे निकलू हे! नीलकण्ठ,
है निकल नहीं मैं पाता हूँ। (44)

राघव के मन की बात सुनी,
हर्षित होकर शंकर बोले।
तुम जगत नियंता हो रघुवर,
बनते हो तुम कितने भोले। (45)

हे! राम तुम्हारी पूजा से,
होने वाला अब मंगल है।
संताप मिटादो अब मन से,
आने वाले अब शुभ दिन है। (46)

रण बीच विजय तुम्हारी हो,
शत्रु सारे मर जायेंगे।
तुम लखन साथ है सियापति,
अविलम्ब अवध को जायेंगे। (47)

वो बड़ा विकट यौद्धा भारी,
पर दुश्मन भी कहाँ निर्बल है?
हे राम तुम्हारी जय होगी,
माना कि ये अति दुर्गम है। (48)

वह पतित मार्ग का गामी है,
वह गर्व का पुतला ठहरा।
पर आपके अंदर धीरज का,
देखा मैंने सागर गहरा। (49)

मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु!
सदा तुम्हारी जय होगी।
देख रही बानर सेना मग,
लंका की पराजय होगी। (50)

इतना कह मेरे महादेव,
कैलाश शीर्ष पर जाते हैं।
राघव भी अपने नयन खोल,
सौमित्र को पास ही पाते हैं। (51)

बीती रात अंधेरा घटता,
पक्षी प्रभाती गाते हैं।
झुरमुट से हिरणों का दल,
निकल नीर को पीते हैं। (52)

मत्त मधुर मन मोहक मय,
प्रात काल की बैला है।
बालारुण था चमक रहा,
पीला–पीला रंग फैला है। (53)

राम सहज फिर बोल उठे,
हे लखन! उजागर राज करूँ।
सपने में त्रिपुरारी आये,
जिनके चरणों में नमन करूँ। (54)

है रात बड़ी और बात चली,
वो सब कुछ कहते जाते थे।
मन व्याकुल था जिन बातों से,
मन का संताप मिटाते थे। (55)

भरमों का भंडा फोड़ किया,
कुछ ज्ञान दिया और साहस भी।
अब मन को करलो कड़ा अनुज,
मन धैर्य रखे और राहत भी। (56)

बस चलो यहाँ से दूर कहीं,
हम अपनी मंजिल पा लेंगे।
सीते का जिसने हरण किया,
दुश्मन को धूल चटा देंगे। (57)

थे चले राम आगे होकर,
चलने की गति निराली थी।
तन तेज तमक तकरार भरा,
आँखों में ज्वाला पाली थी। (58)

ये पल–पल रूप बदलता था,
जो अति सुहावन सूरत थी।
'गजानंद' मोद मनाता था,
मन भावन प्रभु की मूरत थी। (59)

फिर पड़ी अचानक नजर उन्हें,
झुरमुट में छिपती दिखती थी।
एक अति सलोनी किन्तु जीर्ण,
कुटिया जंगल में अकेली थी। (60)

संतो की एक टोली आई,
राम से सचिदानंद कहा।
बारी बारी से सब संतो ने,
अन्तर मन का आनंद कहा। (61)

राम प्रभु फिर पूछ ही बैठे,
सुन्दर कुटिया किसकी है।
श्रमणा नाम मतंग की शिष्या,
दलिता भिल्लनी तिसकी है। (62)

सुना राम ने इतना ही भर,
तन पुलकित मन मगन हुआ।
संतो के मुख बड़ी उपेक्षा,
से आनन फिर मलिन हुआ। (63)

जितने भी आये यती यहाँ,
पल दो पल में निकल गये।
अधरों पर ले मुस्कान प्रभु,
राम लखन दो ठिठक गये। (64)

राम का हर्षित गात हुआ,
शीतल आँसु का रैला है।
और कहा लखन तनिक संभलो,
अब संत मिलन की बैला है। (65)

लखन मेरी हर बातों को,
सुनता है, सुन अपना लेना।
जाते ही माता शबरी के,
दोनों पद को तू छू लेना। (66)

मतना समझ हम ठाकुर है,
ठाकुर कि ठसक दिखाना ना।
हम जंगल के अब संत हुए,
संतो के आगे झुक जाना। (67)

मिलता है सच्चा सुख संतो के,
पद वंदन को करने से।
जीवन सफल हुआ ही जानो,
संतो के संग रहने से। (68)

कई दिनो की अमिट तपस्या,
में जीवन को ढोया है।
सुख शबरी को मिला नही,
सुख जीवन का खोया है। (69)

प्रेम का असली रूप दिखाऊँ,
आओ मेरे साँथ लखन।
जाने कब से देख रही वह,
इसी राह पर लगा नयन। (70)

आश्रम – सर्ग

गहन गिरी के अन्दर एक,
कुटिया परम सलोनी थी।
राम नाम की मस्त दिवानी,
कई दिनों से रहती थी। (71)

कुटिया की मुंडैर पे बैठा,
कौआ भोर में बोला था।
परम अतिथि के आने का,
शकुन आज सुनाता था। (72)

चारों और कलरव करते,
थे पक्षी रंग बिरंगे से।
कुछ जाने थे पहचाने थे,
कुछ दिखते बहु रंगे से। (73)

पक्षी जागे धरती जागी,
जर–जर तन ने ली अंगड़ायी।
माता शबरी ने तोड़ समाधी,
वह निकल कुटी बाहर आयी। (74)

राम नाम का गीत लिए ,
जंगल में घूमा करती थी।
जंगल से फूल सलौने चुन,
फल–फूल टोकरी भरती थी।(75)

सुमन सलोने संचित कर,
मग को फूलों से भरती थी।
वह नित प्रति करती यही,
रघुनन्दन सुमरण करती थी। (76)

प्रकृति को अनुकूल देखा,
खुशी का नही ठिकाना था।
फिर अनायास उसको बचपन,
सारा दृश्य नजर आया। (77)

आँखों में पिछली घटनाएँ ,
जो जब से होंश संभाली थी।
निज मात पिता के संग गुजरे,
कितनी कड़बी कंगाली थी। (78)

शैशवी अवस्था थी उसकी,
कुछ विरल घरों की बस्ती थी।
वह अपने घर में इकलौती,
उसे चढ़ी राम की मस्ती थी। (79)

धीरे–धीरे कुछ बड़ी हुई,
कुछ छूट गये खिलौनें थे।
माता पिता ने कर विचार,
डरते थे जिसके खोने से। (80)

जिनके पिता थे बड़े हठी,
वर ढूंड लिया निज जाती का।
करूँ ब्याह अब श्रमणा का,
तैयारी में जुटा बराँती का। (81)

माता पिता जो इसके साथ,
करना चाहते थे मन माना।
बचपन में ही घर छोड़ दिया,
कानन को अपना घर माना। (82)

बारात भोज के खातिर,
पशु पक्षी अनेक एकत्र किये।
पूछा तो उसको पता चला,
ये बलि चढ़ाने के लिये। (83)

शबरी ने इनको मुक्त कर,
घर छोड़ अकेली भागी थी।
उसने सोंचा अब जो भी हो,
कानन में ठोकर खाती थी। (84)

वह भटक भटक कर हारी,
न उसे ठिकाना मिलता था।
उसने देखा एक गुरूकुल को,
दिन इसके सहारे ढलता था। (85)

जप तप वेद पठन करते,
जो निष्ठा से यज्ञ भी करते।
जहाँ मतंग मुनी महाज्ञानी थे,
अनुयायी जिनके संग रहते। (86)

शबरी रात में चुपके–चुपके,
है साफ सफाई देती कर।
जब सब सो जाया करते थे,
जंगल से लकड़ी देती रख। (87)

सब देख अचंभित रहते थे,
ये कौन किये सब रहता है।
पता नही हम सब को ये,
नित कौन जो ऐसा करता है। (88)

कुछ चौकन्नी सी रात हुई,
ये भेद का पता लगाने को।
कौन यहाँ जो आता है,
चुपके से पता लगाने को।(89)

एक रात शबरी दीख पड़ी,
पहचाना उसको पकड़ लिया।
सब भेद अभि खुल जायेगा,
मुनियों ने ऐसा ठान लिया। (90)

वो महामुनी के पास गये,
सारी घटना जो थी कहकर।
देखो ये कोई बाला है,
आये सबके सब मिलकर। (91)

महामुनी ने मुनियों से,
पूछा की कौन विपत आयी।
निशा अभि कुछ शेष रही,
मुनियों ने सब घटना गायी। (92)

वे हाथ जोड़ बोले गुरूवर,
ये अबला नीच जाति की है।
सारे आश्रम को भृष्ट किया,
ये नित प्रति सेंध लगाती है। (93)

इसके मन में है क्या भगवन,
मन में शंशय सबके है।
बस यही भाव से इसको ले,
मन में जिज्ञासा सबके है। (94)

महामुनी ने सब घटना को,
अन्तर मन से देख लिया।
कुछ कहते इससे पहले ही,
वत्सल प्रेम उमड़ आया। (95)

बोले सप्रेम गद्–गद् वाणी,
वाणी में मधु समाया था।
पित्र भाव फिर जाग गया,
जो सबके मन को भाता था। (96)

श्रमणा को अपनी बेटी कह,
उसका सम्मान बढ़ाया था।
सब मुनियों के अन्तर मन से,
जाति का भरम मिटाया था। (97)

यह धर्म की बेटी है मेरी,
सबको ऐसा समझाता हूँ।
बेटी तुम अब यही रहों,
मैं आज तात् बन पाया हूँ। (98)

जीवन अब निश्चिंत तुम्हारा,
खाना पीना और सोना।
राम नाम की सेवा करते,
अपनी मरजी से रहना। (99)

हुई गुरू की कृपा अभागिन,
का जीवन भी बदला।
राम नाम की बगियाँ में,
फूल सुगंधित महका। (100)

महामुनि से कर विरोध,
मुनियों ने नफरत पाली थी।
धीरे–धीरे गुरूकुल त्यागा,
कुटिया हो गयी खाली थी। (101)

मतंग मुनी और शबरी केवल,
कुटिया में शेष बचे थे।
दोनों के अन्तर मन में,
श्रीराम भी रहने लगे थे। (102)

कड़ी साधन शबरी करती,
संयम जीवन जीती थी।
महामुनि मन हर्षित होते,
दिन दिन बढ़ती प्रीती थी। (103)

दिन बीते, महीनें, वर्षो,
समय गुजरता जाता था।
गर्मी वर्षा शीत का मौषम,
अपना असर दिखाता था। (104)

पंपासर के निकट तपोवन,
मन भावन अति पावन है।
गौरव गाथा अटल रहे,
जब तक गंगा में जल है। (105)

शिवनारायण नदी किनारे,
परम शान्ति रहती है।
कल–कल जल बहता जिसमें,
अति प्राचीन नदी है। (106)

महामुनि भी बैठ किनारे,
करते रहते जप है।
अति शौम्य स्वभाव हर्ष,
के जीवन बीता क्षण है। (107)

धीरे–धीरे आयु बीते,
जाता चौथा पन है।
पाँचो तत्व की है मर्यादा,
बिखरन को तत्पर है। (108)

महामुनि के जीवन पथ के,
सबसे स्वर्णिम दिन है।
सदा लीन अलमस्त मगन,
बस राम नाम की धुन है। (109)

शबरी को ले निकट बैठ,
बहु विधी कथा सुनाते थे।
अनुभव होता जो जीवन में,
सबका सब समझाते थे। (110)

शबरी आज में बहुत खुशी,
रग–रग आनन्द भरा है।
एक मर्म की बात सुनों,
जिसमें राज गेहरा है। (111)

बेटी मेरा समय निकट,
ढलने वाला ये दिन है।
तन मेरा हो चला पुराना,
महा प्रस्थान के दिन है। (112)

अब तुम रहना यहीं खुशी,
हर दिन तैयारी करना।
सिया खोज में अनुज संग,
आयेंगे स्वागत करना। (113)

प्रभु राम के दर्शन होंगे,
तुम जीवन धन्य बनाना।
मेरा वचन न खाली होगा,
पुण्यों की पूँजी पाना। (114)

'गजानंद' अवसर पाते ही,
शबरी के संग रहना।
तेरे भाग्य भी जग जायेंगे,
हर दिन चौकन्ना रहना। (115)

राम नाम के मनके मन में,
गिन–गिन रोज रखेंगे।
परम कृपालू करूणा कर,
चरणों में शायद रख लेंगे। (116)

आहाह! दिव्य मनोहर झाँकी,
देख–देख सुख पाऊँ ।
तीनों लोक बार दूँ तुम पर,
मैं बलि–बलि शीश नवाऊँ। (117)

शबरी तू बड़भागी बेटी,
जन्म सफल कर लेना।
इतना कह फिर महामुनि,
हुए मौन, बंद नैना। (118)

महामुनि हुए गगन गामी,
एक पुंज रूप को धरकर।
पंच तत्व जब बिखर गये,
मृत्यु का वरण स्वंय कर। (119)

शबरी को बज्र आघात लगा,
वो बिलख–बिलख कर रोई।
उसको देता यहाँ धैर्य कौन?
कुटिया में शेष ना कोई। (120)

समय पाय तरूवर फले,
समय ही भरता घाव।
धीरज धर मन में मना,
धीरज से मिलेंगे राम। (121)

जो जितना धीरज धरता है,
जीवन को सरल बनाता है।
राम उसे आकर मिलते है,
दर्शन से मन भर जाता है। (122)

समय गुजरते देर नही,
बदले दिन और राती।
मौषम गुजरे नया लगे,
निशा के बाद प्रभाती। (123)

आसमान में राका दिनकर,
बारी–बारी आते जाते।
अपनी हैसियत के अनुसार,
अंबर को रोशन कर पाते। (124)

चटक चाँदनी मन मोहक,
हर जीव को लगे सुहानी।
जाड़े की ठिठुरन हर लेती,
सूरज की धूप निराली। (125)

आमों में फिर बौर लद् गये,
पलाश फूल हुआ पीला।
झरबैरी के बेर पक गये,
अमरुद पका हुआ गीला। (126)

पकी धान की मन्जरियाँ ,
सरसों भी लगे सुनहरी।
चना पकने खेतों में बैठा,
गुलाबी कली ले गहरी। (127)

चल रे मन! कहाँ उड़ चला,
नित रामचरण रख प्रीती।
सारे वेद शास्त्र समझाते,
संतन पहचानी रीती। (128)

शबरी को बंधता गया धैर्य,
कुछ दिन मातम में बीते।
भक्ति को अपनी दृढ़ करती,
रसना अम्रित रस चाखे। (129)

गुरू कृपा से गद्–गद् होती,
हर्ष न मन में समाता था।
हृदय का आनंद झलक,
मुख मण्डल पर छाता था। (130)

मनोभाव सब पूरे होते है,
मानव के जीवन में।
राम दरस की रही लालसा,
शबरी के जीवन में।(131)

गुरू हमारे स्वर्ग सिधारे,
छोड़ अकेली वन में।
राम तुम्हारे दर्शन कब होंगे,
कसक है बाकी मन में।(132)

स्याही छोड़ सफेदी आई,
विरल केश रहे सिर में।
बत्तीस बस्ती उजड़ गई,
झुर्रियाँ बसे अब मुख में।(133)

आँखे कोटर अंदर धँसती,
सिसक उठती भर छाती।
कुटिया के किसी कौने बैठ,
नित निर्मल नीर न्हाती। (134)

सेवा भाव ग़जब शबरी में,
गुरू आज्ञा मान निभाती।
मीठे बैर रोज जंगल से,
पथ फूलों सेज सजाती। (135)

हर दिन करती यही काम,
दिन इसमें कट जाता था।
बूढ़ा तन फिर थक चूर चूर,
रात को सो जाता था।(136)

नीर नदी का पावन पाती,
मल मल काया धोती।
संतो के सारे व्रत उपक्रम,
संतो सा जीवन जीती। (137)

हे राम! रखा क्या जीवन में,
एक दिन तो मरना होगा।
मन राम जपन में लग पगले,
होना होगा सो होगा। (138)

जब जीवन मिला तो जीना है,
घुट घुट के फिर क्यों मरना।
यह भव सागर का बेड़ा है,
इससे भव पार उतरना। (139)

विपुल प्रकार मन में विचार,
शबरी के आज है आया।
बचपन से लेकर गुरू मिलन,
सब घटना मन भरमाया। (140)

फिर गुरू बिछड़न की पीड़ा,
शबरी ने कैसे खोली।
शबरी ने बचपन से वृद्धा,
तक सारी कथा परोली। (141)

विनय – सर्ग

नया सबेरा मधुर सुहाना,
कलरव करते पंछि।
पवन आई पूरब से बहती,
शीतल मंद सुगंधि। (142)

खिली हुई है धूप के जिसने,
पीतांबर जामा पहना।
सेंक सुहानी लगे कि इसके,
संगत में बैठे रहना। (143)

आज सबेरे शबरी करती,
मन में बड़ा विचार है।
हो रहे यह शगुन सलोने,
कागा बोला भुनसार है। (144)

शबरी राम–राम सुर गाती,
चौक पुराती फूलों से।
स्वाँसो का स्पन्दन चलता,
ऊँचे नीचें झूलों से। (145)

शबरी बंदनवार सजाती,
रोज सबेरे इंतजाम।
नूतन लगा पुरातन काढ़े,
आते होंगे लक्ष्मण राम। (146)

कभी अकेली बातें बड़–बड़,
कभी मौन हो जाती थी।
लगे की मानो सनकी हो गई,
सनक कभी मिट जाती थी। (147)

कभी नाच मन में आनंदित,
हरस–हरस सुख पाती।
कभी गात खिल पुष्पन भांति,
कभी शहद की माखी (148)

राम लखन की सुन्दर जोड़ी,
धीरे धीरे आती थी।
अधरों पर मुस्कान मनोहर,
मन को भाने वाली थी। (149)

दृग में खोज ग़ज़ब गहरी,
मानो प्यासा हो व्याकुल।
कोई खोज रहा हो जल को,
प्यास से प्रेरित हो आकुल। (150)

आतुर लगन उधर जैसी,
वैसी हालत इधर भी थी।
दोनों में खोज इक दूजे की,
दोनों की हालत एक सी थी। (151)

मंदिर को ज्यों दीप मिल गया,
प्यासे की प्यास हुई पूरी।
विकल आत्मा परम पिता की,
हुई खतम मानों दूरी। (152)

शबरी को जब राम दिखाई,
दिए दृगों को चैन मिला।
भाव विभोर हुई वह पगली,
हुमक उठी और धीर मिला। (153)

प्रेम प्रगाड़ सनी अश्रु बूंदे,
गिरी धरा पर बन विकसी।
मेरा यह अनुमान है संभव,
वही गुलबकावली बनी। (154)

गरज चमक ज्यों बादल की,
हद छूट अनहद धुन बाजे।
राम खड़े आँखों के सम्मुख,
देव दुदुंभी धुन बाजे। (155)

शबरी ने अवसर पाकर,
युगल चरण को पकड़ लिया।
शाखा मृग शिशु से चिपटा,
शिशु ने माँ को जकड़ लिया। (156)

राम नाम के हीरे मोती,
बाँटे शबरी कानन में।
राम आज अतिथि बनकर,
बैठ गये निज आंगन में। (157)

बने कैल के आसन पत्तें,
झाड़ू बनाया आँचल को।
शबरी बिच–बिच राम निहारे,
राम निहारे शबरी को। (158)

परम अनुठा आज मिलन है,
भक्त और भगवान का।
कहे 'गजानंद' अन्तर्मन से,
असली रूप भगवान का। (159)

प्रभु राम इतना कह पाये,
माता शबरी कैसी हो।
लाचारी बैबसी दीन सी,
सुरत बिगारी कैसी हो। (160)

छुआ राम ने शबरी का सिर,
जय जय गुंजार गगन हुआ।
सारे देवता पुष्प भर अंजुरी,
बरसा फूल मन मगन हुआ। (161)

जाति बड़ी रघुनाथ तुम्हारी,
मैं कानन की वासी हूँ।
मैं अबला अति नीच जात की,
पद वंदन की प्यासी हूँ। (162)

हे राम! औगुण विपुल मेरे,
गुण नही कुछ शेष है।
मैं किस विधि तुमको मनाऊँ,
सुनो मेरी अवधेष है। (163)

निश्चल प्रेम जिसका हृदय,
या बैरागी मन हो।
वेद शास्त्र का हो ब्रह्म ज्ञानी,
या योग शास्त्री तन हो। (164)

जात पाँत से मुझे क्या लेना,
ऊँच–नीच न जानू मैं।
सबसे ऊँची प्रेम की प्रीती,
असली भाव पहचानू मैं। (165)

मैंने निषाद को गले लगाया,
एक पत्तल में खाये फल।
साथ गुरूकुल विद्या पाई,
एक बेल के हम दो फल। (166)

निषाद दीखे भरत सरिस,
नही लखन से प्यारा कम।
कितना मुझसे प्रेम रखे,
आतुर सदा मिलन को हम। (167)

सुनो सुनाऊँ निज जीवन की,
प्रेम से भरी कहानी माँ।
गंगा मुझको पार उतराने,
वाला केवट दीन था माँ। (168)

अति प्रेम से हर्षित होकर,
मल–मल पाँव पखाले माँ।
गंगा पार कराने वाले को,
मैंने गले लगाया माँ। (169)

बहू आपकी सीता का जब,
गगन मार्ग से हरण हुआ।
गिद्ध जटायु का दुश्मन से,
लड़ते–लड़ते मरण हुआ। (170)

तड़पते गि़द्ध को ले गोदी में,
निज पद दे उ़द्धार किया।
सुत बनकर नीच गिद्ध का,
सारा अंतिम कर्म किया। (171)

शबरी माता तुम बड़ भागी,
कोई दोष नही माता।
प्रेम से मुझको पुत्र बनालो,
कौशल्या सम हो माता। (172)

सरल भाव है राम तुम्हारा,
सारा जग गुण गायेगा।
भक्त वत्सल दीन दयालु,
सारा जग तुमको जानेगा। (173)

अगर आज्ञा हो तो भगवन,
पाँव पखारन चाहती हूँ।
मेरा जीवन धन्य करूँगी,
भौ पार तरना चाहती हूँ। (174)

मेरी कुटिया पावन हो गई,
राम तुम्हारे आने से।
पूरे हो गए मनोरथ मेरे,
निज जीवन में पाने से। (175)

पाँय पखाल आरती उतारी,
मन में शीतलता आई।
निर्मिमेष वह पहर भर आधे,
भाव भरी वंदना गाई। (176)

ये सब मानुषी कर्म निभाते,
हो गई पगली को देर बड़ी।
शबरी माँ कुछ दो खाने को,
कई जन्मों की भूख लगी। (177)

शबरी ने सुनी राम की वाणी,
चित चेतन और चौंक पड़ी।
क्षमा करो रघुवीर जी मुझको,
मुझसे हो गई भूल बड़ी। (178)

गई हर्षित कुटिया के अंदर,
आनन फानन बाहर आयी।
हाथ में सुन्दर रखे टोकरी,
फलाहार से भर लायी। (179)

राम तुम्हारे खातिर वन से,
मीठे बेर चुन लाई हूँ।
भोग लगाओं बैकुंठ बासी,
तुम्हें खिलाने आई हूँ। (180)

माँ उर अति उदार जग में,
माँ सम दूजी माँ है।
माँ की उपमा नही जगत में,
बिन उपमा की माँ है। (181)

माता बिन सूना जग सारा,
मतलब के सारे नाते।
छल कपट फरैबी दुनिया,
पग–पग छलती हे माते! (182)

दो रंगी इस दुनिया का रंग,
रास मुझे नही आता है।
माने नही 'गजानंद' कहना,
इसे समझ नही आता है। (183)

गले दो लिए लोग भटकते,
अपनी करनी करते हैं।
शिष्टाचार का हुआ विलोपन,
लालच में डूबे रहते है। (184)

अंधन को रस्ता कौन बतावें,
मगरूरी में फिरते हैं।
बात किसी की कोई न माने,
मनमर्जी का करते हैं। (185)

भाई से भाई दगा कर रहा,
गिरगिट रंग बदलता है।
दिनन चार की है जिंदगानी,
तू तीन दिनों से रूठा है। (186)

बिन पैंदी के लुटिया हो गये,
गड़बड़ करे घटोला।
कहाँ टिकेगी थिरकी दुनिया,
इसका क्या हल होगा। (187)

राम जी माया अजब निराली,
ये सुन्दर धरा बनायी है।
सब घट अंदर रहने वाले,
कुछ के समझ में आयी है। (188)

भिन्न भिन्न के रंग रोगन से,
सकल श्रष्टि निरमायी।
खाने के लिए फल फूलों से,
बगियन खुद उपजायी। (189)

तरह–तरह के लोग बनाये,
फिर उनमें प्रीति जगाई।
पर्वत सा विशाल तन कोई,
कद काठी लघु बनाई। (190)

धनिक बनाया किसी किसी को,
निर्धन से धन छीना।
किसी के किस्मत लिखा कटोरा,
किसी के हाथ नगीना। (191)

फूल खिले हैं इस धरती पर,
कितने रंग बिरंगे हैं।
अमृत सा मीठा जल ले,
नदियों में उठे तरंगे हैं। (192)

कितना सुन्दर दृश्य जगत से,
अनुपम और सुहाना है।
ताल तलैया झील नदी सब,
राम की प्यारी माया है। (193)

पावन मिट्टी का हर कोना,
पावन रूप स्वरूप बना।
सारे जगत में कही नही है,
भारत के जैसा देश बना। (194)

भारत की मिट्टी पावन है,
कोटि–कोटि जिसे वंदन है।
किस्किन्ध्या अंचल पर्वत के,
सब तरू मानो चंदन है। (195)

किसी को कितना स्वस्थ बनाया,
किसी की रोगी काया।
किसी का श्यामल रंग बनाया,
किसी की गौरी काया। (196)

बिना सूत गुनिया के प्रभु जी,
कितनी सुन्दर रचना है।
फूल पत्ति फल जो अनेकों,
सबकी अलग तृष्णा है। (197)

धरती अम्बर तारें सूरज,
नाला ताल तलैया जी।
किसी के नाते रिश्ते विपुल है,
किसी के चंदा मामा जी। (198)

सजता यहाँ बाजार विधाता,
बोली लगते दामों की।
बिकने को हर चीजें जग में,
मूल्य आँकते कामों की। (199)

इज्जत आबरू दया शरम,
सब घर से वीरान हुए।
धरम ईमान शपथ सौगंध,
सब के सब हैरान हुए। (200)

अधिकतरों की नाकें नही है,
सूर्पनखाँ सी दिखती है।
दाम, दबिष, दीनता, दलित,
चंद टकों में बिकती है। (201)

रोगी को पथ्य मिला नही की,
आयुर्वेद डँस जाता है।
वृद्ध की जान अभि न निकली,
कफ़न पूर्व सिल जाता है। (202)

फलते तरू रहे काट सब,
नये लगाना बंद किया।
वृक्षारोपण कर रहे ड़ाल का,
करें दिखावा चंद दिया। (203)

मेरे राम तुम्हारे मंदिर में,
पद दलित पुजारी घूम रहा।
खान पान आचार व्यवहार,
नख शिखतें लंपट घूर रहा। (204)

ड़र लगता है सच कहने से,
अपराध झूठ खुल्लम खुल्ला।
मेरे राम तुम्हारी दुनिया का,
प्रभु आप ही पकड़ो पल्ला। (205)

चौपाल गलीचा खाली संतन,
सत की बात ना होती है।
जुएं शराबी गाँजा भाँगी,
सज धज खातिर होती है। (206)

गाँव शहर महा नगरों में,
जीती अभि तक छुआ छूत।
झाड़ फूँक और अंधविश्वास,
अभि जिंदा है पीपल का भूत। (207)

भ्रुण हत्यारें घूमते दिखते,
दहेज के लोभी जिंदा है।
गोस्त काटकर बैचने वालों,
का धंधा भी जिंदा है। (208)

जल में तू है थल में भी तू,
और नभ में उड़ता तू।
राजा रंक पशु पक्षिन में तू,
वन उपवन में रहता तू। (209)

मंदिर में तू मूरत भी तुम,
गंगा यमुना में रहता।
वट पीपल धरती का कण,
तुझसे नही अछूता। (210)

माता पिता सुत दारा बनिता,
सबके अंदर रहता तू।
प्रेम से सबको एक कुठरिया,
दर–दर फिर कर देता तू। (211)

बड़ा कुशल कारीगर तू है,
तुझको कौन समझ पाये ?
अजब बनायी दुनिया सारी,
दास 'गजानंद' गुण गाये। (212)

मुक्ति – सर्ग

खिला सुमन शबरी का उर,
आनंदू मगन भरा है।
विकसित होते पुष्प चमन,
मेहकी सुगंध धरा है। (213)

कितना अनुपम दृश्य हुआ,
कुन्दन सी हो गई लाली।
राम विराजमान जो आँगन,
अजिर की छँटा निराली। (214)

हे! विधना गरीब की दुनियाँ,
में अंधेरा कितना है।
मैं भात बनाती भोग लगाती,
अन्न का नही कतरा है। (215)

राम प्रभु ने कहा की शबरी,
किस संकोच में डूबी हो।
मेरे उर खाने की चाहत माँ,
सेहजा पास में जोभी हो। (216)

अति गरीबन ते गरीब मैं,
क्या खातिर कर पाऊँगी।
बेर मिले खट्टे या मीठें जो,
मैं उसका भोग लगाँऊगी। (217)

मेरी जिंदगानी पूरी हो गई,
नही मिठाई है खायी।
मेवा और मिष्ठान प्रभु जी,
कभी ना रसना चखायी। (218)

दशरथ के जैठे रघुराई,
महलों ने तुमको पाला है।
हमारी अति जीर्ण झुपड़िया,
इते फटे हाल कंगाला है। (219)

तीन लोक के नाथ राम तुम,
चक्रवर्ती के बेटे हो।
मुझ गरीब के बने अतिथी,
मेरे आँगन आ बेठे हो। (220)

बेर अगर तुमने त्यागे तो,
ये जग हँसी उड़ायेगा।
मन मारे खा लिए अगर तो,
क्या तुमको रुच पायेगा? (221)

इसी उहापोह की उलझन,
मेरे मन को तड़ पायेगी।
लगा सकी न भोग सियापति,
मुँह कालिख पुत जायेगी। (222)

विकल वैदना लिए बिलख,
हिचकी के हिचकोले थे।
आनन से बैन नही निकले,
नैनन ने आँसु घोले थे। (223)

ये देख दशा जब शबरी की,
राम भी हो बैचेन गये।
लौचन उनके भी भर आए,
अंतः मेघा बरस गये। (224)

भक्तों को भव सागर में,
आँसु बहाते देखा है।
आज मर्यादा तोड़ते प्रभु को,
हमने रोता देखा है। (225)

अहाहा! करूणा सिन्धु प्रभु जी,
करूणा आज दिखातें हैं।
श्रमणा को देकर धीर राम,
सहज भाव में आतें हैं। (226)

देखी दशा करता–करम की,
लक्ष्मण के मन भाये।
बोल न सके बस मौन रहे,
मन में मंद मुस्काये। (227)

अजब दशा थी माँ शबरी की,
वर्णन करें न कोई।
गजब दशा करतार हुई,
दर्शन करें न कोई। (228)

रे मन ऐसे अवसर पर,
किये बंद क्यो नैना।
ये झाँकी 'गजानंद' फिर कहाँ ,
भौ पार हो जाती नैया। (229)

बेर छाँट राम को देते कहा,
रूको जरा अन्तर यामी।
चखलूँ अगर हुए खट्टे तो,
दोगे निकाल कोई खामी। (230)

प्रेम सने ये बेर तुम्हारे,
मेवे से अति मीठें हैं।
प्रेम है बड़ा जगत में नाता,
वेद पुराण गातें हैं। (231)

शबरी चखती राम खिलाती,
परम स्वाद आ जाता था।
लखन देख मन ग्लानी लाते,
नाक सिकोड़े जाता था। (232)

देख छबि यह राम की न्यारी,
लखन सोंचते मन में।
क्या है ये भाव विधाता जाने,
मिचली सी लाते मन में। (233)

राम ने देखा कटी नजर से,
भगवान देख मुस्कातें।
लो खाओ मेरे अनुज लखन,
आजन्म कभी न खाये। (234)

शबरी ने फिर एक बेर दी,
एक बेर दी खाली।
लखन ने खायी नही दवा ली,
किया बहाना खाली। (235)

देखा यह स्वभाव लखन का,
पेट में कपट की गाँठी।
शबरी से फिर राम प्रभु ने,
मन ही मन माफी माँगी। (236)

माता यह बालक नादान है,
यहाँ नही दोष है इसका।
जीवन में छल ही छल देखा,
बदल गया मन इसका। (237)

कैकई माँ भी छल कर बैठी,
तात के निज जीवन में।
दो वर के बदले शबरी माँ,
भटक रहे हम वन में। (238)

एक बार उर्वशी सम बाला,
पंचवटी में आई थी।
काम से आतुर प्रणय छली,
लखन रिझाने आई थी। (239)

क्या बतलाऊँ दूध जला ये,
छाछ को दूध समझता है।
शिशु नादान बदन में ज्वाला,
फूंक–फूंक पग धरता है। (240)

क्षमा करो अपराध अवज्ञा,
करनी का फल पायेगा।
जैसी करनी पार उतरनी,
ये फल करील खायेगा। (241)

मन ही मन श्रीराम–शबरी,
की बाते हुई निराली।
शेष फनी भी हुए बेखबर,
मन की किसने जानी। (242)

नही प्रभु मैं चरणों की दासी,
रज ही चरणों की जानो।
हुई हो मुझसे भूल अगर,
सब अपराध भुला दो। (243)

राम किये उपास विपिन में,
कई दिनों की भूखी रात।
वर्षो वरष घूमते जंगल में,
कहीं न खाया मीठा भात। (244)

टोकरी भरी बेर खाली हुई,
अमृत सी थी मधुराई।
राम प्रभु आह्लादित हो गए,
छक के खाये रघुराई। (245)

माँ! कई दिनों की भूख मिटा दी,
आज पेट भर खाया है।
चला हूँ घर से रूका नही हूँ,
पैरो ने आज बताया है। (246)

थोड़ी देर आराम की चाहत,
यहाँ मिली ममता की छाँव।
कितनी शीतलता कुटिया में,
शीतलता का मानो गाँव। (247)

नही मिला प्रासादों में मुझको,
ऐसे सुख से वंचित था।
छोड़ चला आया मैं सब कुछ,
धर्म जो मेरा संचित था। (248)

प्रभु राम फिर बैठ गये यूं,
महावट की छाया में।
शबरी ने जल पान कराया,
अंतस अभिलाषा में। (249)

हाथ जोड़ मन की अभिलाषा,
राम प्रभु से कहती थी।
राम तुम्हारे दर्शन हो गये,
अभिलाषा ये महती थी। (250)

राम की सुन्दर छबि निराली,
पास लखन विराजे थे।
केश पुंज की जटा मनोहर,
कान ढ़ँके घुँगराले थे। (251)

भुजा विशाल पहुँची पेहरे,
हाथों में शर कमान धारे।
चंदन का टीका मस्तक पर,
थे शबरी ने अभी संवारे। (252)

श्याम वर्ण वल कल धारी,
लौचन लाल सुहाते थे।
उर बनमाल सोहे जिनके,
मधुर मंद मुस्काते थे। (253)

मन कोमल–कोमल बातों से,
सबको आकर्षित करते।
मधुर मनोहर संवादों से,
कान मधुर रस भरते। (254)

शबरी विनय भाव से बोली,
करूणा सागर स्वामी।
आओं कुटी बिहार कराऊँ,
क्षीर सिंधु के निवासी। (255)

मन अचंभित दृश्य जो देखा,
देखा जादू सा छाया था।
पशु पक्षी में गजब का देखा,
कैसा प्रेम समाया था। (256)

सरिता तीर जो प्यास मिटाते,
भूल गये थे भाव बैर।
शबरी की ममता का असर,
एक साथ थे गाय शेर। (257)

मेंढक–अहि औ चूहा–मांजरी,
एक साथ में रहते थे।
साँप–कलापी, बगुला औ मीन,
अभय भाव से दिखते थे। (258)

तरूओं की डाली लदी फलों से,
झुकी धरा को छूती थी।
फूलों पर मंडराती तितली,
मधु रोज चुराती थी। (259)

मन मोहक दूर्वा दल कैसे,
ओस में रोज नहाते थे।
वन की विकसित वनस्पति,
कानन निधि कहाते थे। (260)

शबरी माँ अब मुझे बताओं,
आगे में कौन राह जाऊँ।
माता मार्ग मेरा कर प्रसस्थ,
ताकी सीता से मिल पाऊँ। (261)

राम तुम्हे मैं क्या बतलाऊँ,
रवि को दीप दिखाऊँ क्या?
जानत हो सबके अन्तर की,
तुमसे कौन छिपाता क्या? (262)

सब कुछ साफ नजर आता है,
भक्तों का मान बढ़ाते हो।
यही सादगी सबको भाती है,
मन भावन बन जाते हो। (263)

सुनो तो आगे कहूँ राम तुम,
अपनी मंजिल पाओगे।
तनिक दूर आगे जाने पर,
गिरि ऋषि मुख जाओगे। (264)

वहाँ जो बानर भालू मिलेंगे,
सीताजी की खोज करेंगे।
बानर राज को मित्र बनाना,
सारे भ्रम दूर करेंगे। (265)

जिनमें एक अति बलवाना,
पवन पुत्र का बाला है।
चिर परिचित भक्त तुम्हारा,
अंजनी का हनुमाना है। (266)

सुग्रीव अति दुखी बानर है,
वाली ने जिसे सताया है।
पाली जिसने निज मन शंका,
घर से दिया भगाया है। (267)

तब से दुबक छिपा बैठा है,
अपनी जान बचाता है।
वाली श्रापित होने के वश,
पर्वत पर नहीं जाता है। (268)

वाली ने निज अनुज कि दारा,
ते अधिकार जताया है।
वह बंदर कंदर अंदर,
आपका नाम ही गाता है। (269)

प्रभु उनके संताप मिटादो,
वे आपके काम आयेंगे।
चरण रज पायेंगे पाकर,
जीवन धन्य बनायेंगे। (270)

ठीक है माता शबरी मुझसे,
भूल हुई हो क्षमा करना।
अब चलता हूँ लक्ष्य बुलाता,
काम तो पूरा होगा करना। (271)

तुम कानन में रहो खुशी से,
मंदिर सा घर तेरा है।
मुझको तो अब चलना होगा,
शूल भरा मग मेरा है। (272)

मुझे अटल विश्वास तुम्हारे,
तीरों में दम कितना है।
अजान बाहू राम सुनो तुम,
कौन बली जो कितना है। (273)

जितना होगा कुटुम्ब कबीला,
महल अटारी बाला हो।
निर्धन हो या हो धन बाला,
भाईयों भतीजे बाला हो। (274)

धीरज राम तुम्हारे मन में,
विजय चिन्ह यही तो है।
नियम संयम रहा जीवन,
मरें दुश्मन तय तो है। (275)

तुमने जंगल में दिन काटे,
संघर्षो ने पाला होगा।
वह बिलासी राज महल का,
संभव है भोगी होगा। (276)

श्याम सलौने राम तुम्हारे,
दुश्मन को तो मरना होगा।
शील आपका सर्वोत्तम प्रभु,
पापी को भी तरना होगा। (277)

तीर से आपके मरना होगा,
करनी का फल पायेगा।
कुल में फिर न दिया जलेगा,
कहो कैसे रह पायेगा। (278)

सारे देव फिर आसमान में,
जय श्रमणा की गाऐ थे।
राम लखन शबरी तीनों को,
फूलन से नहलाऐ थे। (279)

शबरी ने फिर हाथ जोड़ यूं,
विनय भाव में बोली थी।
राम मुझे कुछ ज्ञान बताओ,
वाणी मिठास में घोली थी। (280)

जप–तप बिना बीता जीवन,
नही विराग उर मेरा।
भक्ति नही की राम तुम्हारी,
गफलत जीवन मेरा। (281)

मुझे सुना दो राम तुम्हारी,
कथा पुराण प्रसंगा।
भँवरों में कही न अटके,
लगे न कोई तरंगा। (282)

मेरी नैया भव सागर तर,
लग जाऐ किसी किनारें।
आपको अरपण ये जीवन,
कोई तो जतन विचारें। (283)

अब दो सच्चा ज्ञान या लौचन,
अन्तर तम मिट जाऐं।
घट सचिदानंद मिले मुझे,
बंद किवार खुल जाऐं। (284)

उड़ना चाहूँ मैं बादल संग,
बरस मिलू सागर में।
सागर से फिर लौट न पाऊँ,
भर दो किसी गागर में। (285)

बूंद अकेली गिरी रेत पर,
सूख तपूंगी तपन से।
अनसुलझी ही रही अधूरी,
बेमतलब जीवन से। (286)

कितना भटक चुकी हूँ राघव,
नज़र रहम की कर दो।
अबकी बार भी नही निभाया,
तो पत्थर की कर दो। (287)

अब तो जीवन हार गयी हूँ,
मौल रहा न तनका।
माला अब बिखरन को आई,
धागे ने छोड़ा मनका। (288)

जग की है यह रीत तपस्वी,
आता है सो जाना होगा।
अटल सत्य है टले नही जो,
चिर निद्रा सोना होगा। (289)

राम प्रार्थना शबरी करती,
कुछ पल और मुझे दे दो।
कैसे भक्त रिझाते दयानिधि,
रीत कहानी सब कह दो। (290)

शबरी के मन की अभिलाषा,
मन में गहरी जिज्ञासा।
अवसर फिर मैं क्यों जाने दूँ,
राम ने फिर गायी गाथा। (291)

राम सुनाते शबरी के चित,
सारी कथा उतरती जाती।
सुनती सुनकर हर्षित होती,
राम छबि उर बस जाती। (292)

प्रभु राम ने सबसे पहले,
संतन की कथा सुनाई।
फिर क्रम चला सुनाते जाते,
कहने में फिर रुचि आई। (293)

इतना दृढ़ विश्वास प्रभु ने,
शबरी के अन्तर देखा।
राम प्रभु ने जीवन भर में,
न इससे पहले देखा। (294)

भक्ति मानो स्वयं रूप धर,
शबरी रूप समायी थी।
यह कोई पिछली बैरागिन,
गगन लोक से आयी थी। (295)

नवधा भक्ति का भेद बताऊँ,
माता सुनों जरा मन से।
प्रथम तो यह कि नित प्रति,
संगत करो संतन से। (296)

संतों के दर्शन का फल कभी,
जग में व्यर्थ नही जाता।
दिखा ही देता असर कभी तो,
नित वेद स्वयं यह गाता। (297)

प्रेम से सुनों भगवान कथा,
यही दूसरी भक्ति है।
कथा सतसंग ही धाम मेरा,
सतसंग में शक्ति है। (298)

ऋषि मुनी तपस्वी जितने हैं,
कथा राम की गातें हैं।
दिनचर्या अपनाकर वे सब,
मोक्ष गति को पाते हैं। (299)

तीसरी भक्ति गुरू सेवा कर,
सतगुरू वचन विचारों।
अटल विश्वास गुरू आज्ञा में,
मन से गरब निकारों। (300)

शिष्य की सेवा से जब गुरूजी,
गर कहीं खुश होता है।
शबरी मैं तो खुद कहता हूँ,
वो खुशनशीब होता है। (301)

कपट छोड़ मेरे गुण गाना,
भक्ति चौथी यही है।
मैं मिल जाऊँ सहज भाव से,
मन की बात कही है। (302)

जिसके मन में कपट भरा,
कहो वह प्राणी कैसा।
जगत में उसका कहीं भला,
क्या हो सकता है ऐसा। (303)

राम नाम के मन के मन से,
फैरते जपो हरि नाम।
प्रकार पाँचवी भक्ति यही है,
शबरी करो यही काम। (304)

मन में अटूट विश्वास रखे,
मन और नही आशा हो।
जो आश लगाकर बैठ गया,
मैं सदा हूँ तिन पासा हो। (305)

मानुष चौला पाकर जिसने,
शील स्वभाव है अपनाया।
देवी! अपनाकर षट भक्ति,
आचरण शुद्ध मय काया। (306)

कितनी पावन देह मानुषी,
बेड़ा है भव सागर का।
मूरख बीच में डुबो रहा है,
ज्ञानी माँझी बन तर जा। (307)

भक्ति सात संभाव सकल से,
सबको राम मय मानो।
मेरा आकार सदा ही लघु है,
गरीमा संतो की जानो। (308)

संतो के बल से ही अब तक,
धरती थमी हुई माता।
संत न होते अगर धरा पे,
मनुज कहाँ रह पाता। (309)

आठवी भक्ति का मत ऐसा है,
एक समान हो मनोभाव।
रखें सदा मन अंकुश भारी,
अपनाना दोनों हानि लाभ। (310)

दोष तर्जनी को दिखलाकर,
दिखा देख खुश होता हूँ।
दिशा तीन उंगली की समझो,
त्रिगुना दोष मैं होता हूँ। (311)

खोजना है तो स्वंय में खोजो,
सबके अन्दर रमता हूँ।
पर दोषों को मत ना देखो,
आपका दोष बताता हूँ। (312)

कहाँ ढूँढती शबरी मुझको,
तेरे अन्दर मंदिर मेरा।
मैं तो सकल जीव में रहता,
सबके अंदर घर मेरा। (313)

कपट रहित वर्ताब रखो,
मानवता अपनानी है।
हर्ष विषाद दोनो में समता,
नौमीं भक्ति सिखाती है। (314)

सुखी क्षणों में मुझको भजना,
दुख में आनन्द मनाना।
दुख सुख आता जाता जीवन,
जीवन से क्या घबराना। (315)

नव में से गर एक भी प्राणी,
भगती जो अपनाता है।
डूब सके नही जीवन नौका,
पल में किनार पाता है। (316)

धन्य धन्य शबरी माँ तुमको,
नवधा तुममें समायी है।
देवों को भी यह गति दुर्लभ,
श्रमणा आज तुम पायी है। (317)

शबरी ने जब यह अनोखी,
आज परम पूंजी पायी।
आसमान से फूल बरसाने,
देवन की मण्ड़ली आयी। (318)

झड़ी लग रही आसमान से,
फूलों की वर्षा होती है।
शबरी देख सजल नैनों से,
आँसु की झड़ी लगाती है। (319)

हाथ जोड़ पद राम के आगे,
आज 'गजानंद' गाता है।
धन्य राम सगुण रूप है,
कितना पावन नाता है। (320)

हे राम! तुम्हारी करूँ आरती,
नेती नेती मैं गुण गाऊँ।
दे दो चरण कमल आसरा,
सारा जीवन बलि जाऊँ। (321)

शबरी ने प्रभु राम के मुख,
भक्ति नवधा आज सुनी।
सुनकर अति आर्त हो बोली,
मीठी वाणी शहद घुली। (322)

राम आपकी जय हो, जय हो,
जय हो विधाता श्री पति।
अगणित बार शीश झुकाऊँ,
चरणों में हो सिया पति। (323)

आज गुरू की वाणी सच हुई,
सच सच वैसा ही पाई।
वट के नीचे बैठ पुरातन,
कथा वर्षो पहले गाई। (324)

अजब आज भी तेज आपका,
वट के नीचे दमक रहा।
राम निहारे गुरू तप आभा,
जनु साक्षी दे चमक रहा। (325)

वाणी पार्श्व फिर सुनी शबरी,
बेटी चलो हमारे साथ।
कानों में फिर पड़ी अचानक,
गुरू वाणी वर्षो के बाद। (326)

सुनी तो शबरी सहम गई,
करूणा निधि से यूं बोली।
हे राम आखिरी नमन तुम्हें,
जो मिली जिंदगी संजोली। (327)

देने वाले तुम दाता बनके,
मेरी कुटिया तक आये।
निज दासी से अनजाने बस,
हो चूक पे मन न लाये। (328)

अपराध क्षमा करना स्वामी,
चरणों में निज ले लेना।
अरदास यही अंतिम स्वामी,
दीनन पे दया वर्षा देना। (329)

कितने तारे भव सागर से,
अपने पन के ही नाते।
इस बार आपसे विनती है,
शबरी को भी अपनाले। (330)

शबरी बैठी फिर अचल समाधी,
गजब नजारा दिखाते राम।
नैन मूंद कभी खोल निहारे,
अंदर बाहर दीखे राम। (331)

घट में अंदर निर्गुण बैठा,
जो घट–घट के वासी है।
सम्मुख सगुण स्वरूप खड़े,
सीता के मन वासी है। (332)

जिनकी भृकुटि के इशारे से,
रवि शशि संचालित है।
प्रलय श्रजन करने वाले,
धरा होती विकसित है। (333)

उत्तर पहले बना प्रभु ने,
प्रश्न उपजाये पीछे।
भोजन प्रबन्ध पहले किया,
भूख उपजाई पीछे। (334)

सबका रखता ध्यान विधाता,
कोई ना छूटता तुम से।
चींटी को भी चुन देते प्रभु,
हाथी को भोजन मुख में। (335)

गजब विधाता की करनी है,
सबसे बड़ा बाज़ीगर।
दुनिया सारी विचित्र बनाई,
कुशल बना कारीगर। (336)

हे प्रभु सबको जीवन देना,
सबको हवा पानी दाना।
सबके पाप–पुण्य का लेखा,
वही खाता सही बनाना। (337)

पथ से भटके हुए पथिक,
को उचित राह दिखाना।
राम खुमारी कभी न उतरें,
मैं अथक फिरूँ दिवाना। (338)

राम तुम्हारे चरणों में यह,
बीते मेरा सारा जीवन।
चाह नही चिन्ता नही मुझको,
निर्भय सा गुजरे जीवन। (339)

सुनी जो विनती राम प्रभु ने,
भाव विभोर हो जाते हैं।
हर्ष उमंग उमड़त आँसु,
लौचन आद्र हो जाते हैं। (340)

आँखे जैसे हुई हिम कणिका,
होले होले पिघल रही।
या बिन्दु सम रूप बनाकर,
उत्स कुण्ड सी नदी बही। (341)

शान्त चित्त होकर शबरी ने,
लौचन दोनों बंद किये।
कानन में पसरा कोलाहल,
सारी आवाजें बंद किये। (342)

चेहरे पर मुस्कान मधुर,
चितवन खिली हुई थी।
शान्त गात मन राम चरण में,
अवनत झुकी हुई थी। (343)

योग अग्नि में समा गई वह,
ज्योति हुई गगन गामी।
झिलमिल पुंज मौन देखते,
राम लखन दोनों भाई। (344)

महा प्रस्थान जाते शबरी को,
राम ने खोले मन के द्वार।
यहाँ बिदाई लखन के आगे,
मन में दासी का सत्कार। (345)

देते अंतिम बिदा लखनजी,
मन ही मन हर्षाते हैं।
अनायास मेरे राम प्रभुजी,
वर मुद्रा में आते हैं। (346)

आरती

आरती शबरी गाती है,
राम को रोज बुलाती है।

१. मेरा मन मंदिर है सूना,
रोग हर दिन बढ़ता दूना।
दिवस अवसान को है मेरा,
भरोसा बस मुझको तेरा।
निरंतर हरि हरि गाती है.....
राम को रोज..... आरती शबरी.....

२. मुझे दर्शन दे दो श्री राम,
बना दो मेरे बिगड़े काम।
निवासी पंपा सर के तीर,
नैन से नित प्रति बहता नीर।
बेर का भोग लगाती है.....
राम को रोज..... आरती शबरी....

३. सफेदी बालों में छाई,
कपकपी सब तन में आई।
बुढ़ापा कितना भारी है,
दांत गिरना भी जारी है।
"गजानंद" कुदशा आयी है....
राम को रोज..... आरती शबरी.....

कवि– गजानंद डिगोनिया "जिज्ञासु"

आभार

राम भक्त शबरी (खंडकाव्य) के रचना लेखन कर्म से प्रकाशन तक आप सबका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग मिला, आप सबका आभारी हूं, आपके विशेष सहयोग से ही मेरे लिए यह असंभव कार्य सफल एवं पूर्ण हो सका, आपको कोटि–कोटि आभार..

- श्री गुरु महाराज जी – मेरे प्रेरणा स्रोत
- श्री सुखदेव सिंह ठाकुर– गुरु भाई–सीहोर (हिमाचल प्रदेश)
- श्री विकास दवे–निदेशक हिंदी परिषद–भोपाल (मध्य प्रदेश)
- श्री लाल सिंह ठाकुर–सलाहकार एवं साहित्यकार–बड़ोदिया (नसरुल्लागंज)
- श्री दिनेश जोशी– शिक्षक– नसरुल्लागंज
- श्री लखन जी यादव–नेताजी एवं साहित्यकार– बालागांव (नसरुल्लागंज)
- श्री राघवेंद्र ठाकुर –संस्थापक विश्व हिंदी रचनाकार मंच– दिल्ली
- श्री ओम प्रकाश यादव – कवि एवं साहित्यकार– होशंगाबाद
- श्री मारुती शिशिर –साहित्यकार एवं नगर पंचायत अध्यक्ष– नसरुल्लागंज
- श्रीमती रमा भाटी–साहित्यकार– जयपुर (राजस्थान)
- श्री सुरेंद्र सिंह भाटी–संचालक आर. एस. बी. कॉलेज– नसरुल्लागंज (मध्य प्रदेश)
- श्रीमती मनजीत कौर –शिक्षिका एवं समाजसेवी– कर्नाटक
- श्री लखन सोलंकी –कवि एवं साहित्यकार– कन्नौद (देवास)
- श्री राजेंद्र जैन 'अयोग्य' – कवि एवं साहित्यकार– कुकड़ेश्वर नीमच (मध्य प्रदेश)
- श्री सुरेंद्र सिंह 'सागर' – कवि एवं साहित्यकार– श्योपुर (मध्यप्रदेश)

- श्रीमती वेद स्मृति 'कृति' – कवि एवं साहित्यकार– पूणे
- श्री हंस राज 'हंस' – कवि एवं साहित्यकार– प्रयाग (उत्तर प्रदेश)
- श्री छगनलाल मुथा – कवि एवं साहित्यकार– मुंबई (महाराष्ट्र)
- श्री राकेश कुमार तगाला लेखक – पानीपत (हरियाणा)
- श्री सतीश चंद्र तिवारी – लेखक– प्रतापगढ़(उत्तर प्रदेश)
- श्री गणेश राम बेड़ा –समाजसेवी एवं अधिवक्ता– धौलपुर (भोपाल)
- श्री राजवीर सिकरवार "भारती"–कवि एवं साहित्यकार–मुरैना (मध्य प्रदेश)
- श्री शीतल नारायण प्रसाद दीक्षित – मित्र एवं आचार्य– धौलपुर (इंदौर)
- श्री दीपक शुक्ल 'चिराग' – संस्थापक काव्यांजलि अनूठा आरंभ– सुल्तानपुर
- श्री चैनसिंह कीर – मित्र एवं शिक्षक– हरदा (मध्य प्रदेश)
- श्री अरविंद मालवीय – कंप्यूटर एक्सपर्ट– रेहटी (नसरुल्लागंज)
- श्री शिवराज सिंह चौहान – मुख्यमंत्री– मध्यप्रदेश शासन (भोपाल)
- श्री प्रकाशक बुक पब्लिशर एवं सहयोगी टीम जयपुर (छत्तीसगढ़)

अंत में आप श्री समस्त प्रबुद्ध पाठकों, श्रोताओं, मनीषियों, तत्ववेत्ताओं, आपका आशीर्वाद, पुरस्कार, विचार, समीक्षा, सादर आमंत्रित है आशा करता हूं आपका मार्गदर्शन मुझे मिलता रहेगा..

लेखक

गजानंद डिगोनिया "जिज्ञासु"

कवि परिचय

नाम - गजानंद डिगोनिया "जिज्ञासु"
पिता - श्री रामसिंह डिगोनिया
माता - स्व. श्रीमती कृष्णा बाई डिगोनिया
धर्म पत्नी - श्रीमती सीमा बाई डिगोनिया
पुत्र - चि. शिवानंद,
पुत्री - कु. सलोनी

जन्म - 24 अक्टूबर सन् 1980

शिक्षा - बी. एड., स्नातकोत्तर हिन्दी, समाज शास्त्र

सम्प्रति - राय साहब भंवर सिंह महाविद्यालय राला नसरुल्लागंज
सहायक प्राध्यापक शिक्षा विभाग

प्रमुख रचनाएं - अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हर जगह तू, अंतर्मन, भारत की तस्वीर, वंदे मातरम, बिटिया के बढ़ते कदम, मेरा बचपन, उमड़ कर बरसने को जी चाहता है, गर्मी को बुखार, बिकती लाशें, मैं एक शिक्षक हूं, यह धरा हमारी विरासत है।

सम्मान - विश्व हिंदी रचनाकार मंच द्वारा "काव्यश्री सम्मान" 2022

कवि सम्मेलन - प्रदेश के विभिन्न स्थानों में आयोजित कवि सम्मेलन में लगभग दर्जनभर कार्यक्रमों में काव्य पाठ किया, कविता पाठ में प्रधान विषय संवेदना।

निवास - 4031 वार्ड नं. 15 मुन्ना कलोनी, शंकर विहार नीलकंठ रोड नसरुल्लागंज जिला सीहोर मध्य प्रदेश पिन 466331

संपर्क नंबर - 9977925408

Also available as ebook

₹: 180/-

POETRY

ISBN 978-93-5535-553-9

9 789355 355539

BOOKS CLINIC

Available on